B.A- part - I

Subject — Pol. science.
Paper — I (Political Theory)

Topic — "राजनीति विज्ञान का परम्परागत क्षेत्र"
या
"परम्परागत राजनीति विज्ञान का क्षेत्र"
(Scope of Traditional Political science)

Dr. Dhananjay Jha.
Asst. Prof. Guest faculty / part time.
Deptt. of Pol. science.
L.S. College, Muzaffarpur
Mob. 8210688019.

## परम्परागत राजनीति विज्ञान का क्षेत्र :⟹

⟹ किसी भी विषय या अनुशासन से तात्पर्य होता है कि इसमें किन-किन बातों का अध्ययन किया जायेगा। राजनीति विज्ञान एक ऐसा अनुशासन है जिसके क्षेत्र का निश्चयात्मक अध्ययन करना एक कठिन/जटिल कार्य है। बदलते समय के साथ-साथ इसका क्षेत्र भी संकुचित व विस्तृत होता रहा है।

⟹ प्राचीन काल में यूनान में राजनीति विज्ञान का क्षेत्र विस्तृत था क्योंकि जैसा कि हम सभी जानते हैं तत्कालीन समय में राज्य न केवल एक राजनीतिक संस्था थी, अपितु नैतिक संस्था भी थी। राज्य व समाज में किसी प्रकार का भेद (अन्तर) नहीं था। मानव जीवन के प्रत्येक पहलू का अध्ययन इस अनुशासन के अन्तर्गत किया जाता था। यही कारण था कि अरस्तु ने राजनीति विज्ञान को 'गुरु विज्ञान' (मास्टर साइंस - Master science) की संज्ञा प्रदान की थी।

⟹ क्रिक ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "पॉलिटिकल थ्योरी : व्हाट इज इट" (Political Theory : what is it) में इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है।

⟹ अरस्तू ने राजनीति की परिधि में आदर्श राज्य व्यवस्थाएं, नागरिक, दास प्रथा, पैतृक व्यवस्थाएं, धार्मिक संगठन, सामाजिक संस्थान, अन्तर्राष्ट्रीय राज्य व्यवस्थाएं और कर्मचारियों के संगठन को भी शामिल कर लिया।

⟹ एक ओर जहाँ रोमन साम्राज्य में राजनीति विज्ञान की परिधि में 'वैधानिकता' का समावेश हो गया वहीं दूसरी तरफ हम देखते हैं कि मध्य युग में राजनीति विज्ञान का क्षेत्र 'चर्च व राज्य की सर्वोच्चता का संघर्ष' बन गया। इसी तरह बोदाँ ने राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में सम्प्रभुता के तत्व को समावेशित कर दिया और हम देखते हैं कि राजनीति विज्ञान का अध्ययन सम्प्रभुता/प्रभुसत्ता (Sovereignty) के संदर्भ में किया जाने लगा। यह राजनीति विज्ञान के क्षेत्र के संकुचन को दर्शाने का कार्य किया।

20 Sunday

⟹ 19 वीं शताब्दी में अन्य विषयों यथा – मनोविज्ञान, समाजशास्त्र इत्यादि अन्य विषयों के स्वतंत्र अनुशासन के रूप में अस्तित्व में आने के कारण राजनीति विज्ञान भी अलग (पृथक) विषय बन गया।

## परम्परागत राजनीति विज्ञान का क्षेत्र
(Traditional Political science)

सर फ्रेडरिक पोलक के अनुसार

(1) सैद्धान्तिक राजनीति विज्ञान (Theoritical Political science)

(2) व्यावहारिक राजनीति विज्ञान (Behavioural Political science)

⟹ सैद्धान्तिक राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत राज्य की आधारभूत या मूलभूत समस्याओं (fundamental Problems) का अध्ययन किया जाता है जबकि व्यावहारिक राजनीति विज्ञान में राज्य के क्रियात्मक स्वरूप तथा निरन्तर परिवर्तनशील सरकारों के वास्तविक रूप की विवेचना की जाती है।

⟹ पोलक की भाँति गुडनाव एवं सिजविक ने भी परम्परागत राजनीति विज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नांकित पाँच विषयों के अध्ययन को समाहित किया है।—

— (i) राज्य का अध्ययन

— (ii) सरकार का अध्ययन

— (iii) स्थानीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का अध्ययन।

— (iv) राजनीतिक सिद्धान्तों व विचारधाराओं का अध्ययन

— (v) शासन प्रबन्ध का अध्ययन

(vi) अन्य सामाजिक विज्ञानों का अध्ययन

(vii) राजनीतिक दलों तथा दबाव समूहों का अध्ययन
(Political parties) (Pressure groups)

(viii) अन्तर्राष्ट्रीय विधि, सम्बन्धों व संगठनों का अध्ययन

(i) राज्य का अध्ययन (Study of the state) :-

परम्परागत राजनीति विज्ञान के क्षेत्र का वर्णन करते हुए गैटिल ने लिखा है —
"राजनीति विज्ञान राज्य के भूतकालीन स्वरूप की ऐतिहासिक गवेषणा, उसके वर्तमान स्वरूप की विश्लेषणात्मक व्याख्या तथा उसके आदर्श स्वरूप की राजनीतिक विवेचना है।"

इस प्रकार परम्परागत राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत राज्य की उत्पत्ति, इसका विकास, संगठन, आवश्यक तत्वों, प्रक्रियाओं, उद्देश्यों, कार्यों के साथ-साथ नागरिकों के साथ उसके सम्बन्धों तथा अन्य राज्यों, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ उसके सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है।

इसी तरह गिलक्राइस्ट ने भी राजनीति विज्ञान के क्षेत्र को परिभाषित करते हुए लिखा है कि
"राजनीति विज्ञान में यह बतलाया जाता है कि "राज्य क्या है? क्या रहा है? और इसे क्या होना चाहिए।"

गार्नर ने भी राजनीति विज्ञान का विषय क्षेत्र राज्य ही घोषित किया है और परिभाषित किया है कि "राजनीति विज्ञान का आरम्भ और अन्त राज्य से ही होता है।"

—x—